२. ताई

पीठ के आँगन

(१) सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :
(क) कारण लिखिए :
(१) सूचनानुसार कृतियाँ

१. मनोहर रेलगाड़ी में ताऊ जी को ले जाएगा
उत्तर : यदि वे उसे रेलगाड़ी ला देंगे।

२. मनोहर रोने लगा ....
उत्तर : मनोहर रोने लगा, क्योंकि ताई के ढकेलने से उसके हृदय पर चोट लगी थी।

(ख) आकृति पूर्ण कीजिए:
उत्तर: (त) रामेश्वरी को दुख था - अपनी संतानहीनता का
(थ) इससे नाम चलता है - सुकृति से

(ग) संजाल :
उत्तर:

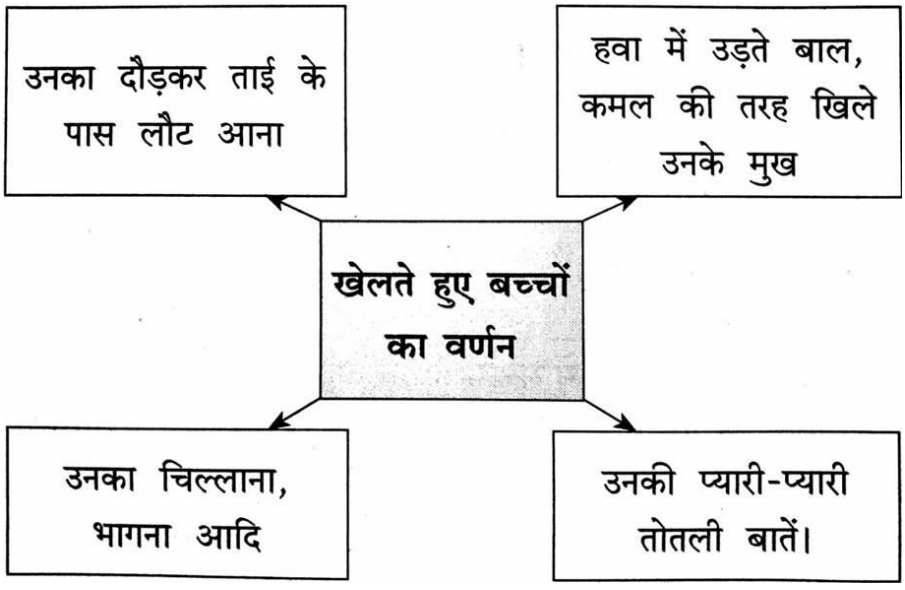

(घ) ताई के स्वभाव
उत्तर: १) संतान की चाहत
२) द्वेष तथा घृणा के कारण बच्चों से दूरी
३) भतीजे से घृणा
४) मनोहर के छत से गिर जाने पर ताई का हृदयपरिवर्तन

(च) अर्थपूर्ण शब्द तैयार कीजिए :
उत्तर:
१) र्धा द् गि अ नी = अर्धांगिनी
२) ता ष्ण स तृ = सतृष्णता

(२) पाठ में प्रयुक्त अव्ययों को ढूँढकर उनका भेदानुसार वर्गीकरण कीजिए। उनमें से किन्हीं चार का सार्थक वाक्य में प्रयोग कीजिए।

उत्तर : अव्यय :
ओर, नीचे, और, परंतु, कि, क्योंकि, इसलिए, तो, चारों ओर, बाद, बाहर

(१) ओर – दिशासूचक क्रिया विशेषण अव्यय
(२) नीचे - दिशासूचक क्रिया विशेषण अव्यय
(३) और - समुच्चयबोधक अव्यय
(४) परंतु - समुच्चयबोधक अव्यय
(५) कि - समुच्चयबोधक अव्यय
(६) क्योंकि - समुच्चयबोधक अव्यय
(७) इसलिए - परिणामदर्शक समुच्चयबोधक अव्यय
(८) तो - समुच्चयबोधक अव्यय
(९) चारों ओर - दिशासूचक क्रिया विशेषण अव्यय
(१०) बाद - समयसूचक क्रिया विशेषण अव्यय
(११) बाहर - स्थितिबोधक क्रिया विशेषण अव्यय

(३) 'ताई की बदलती स्वाभाविक स्थिति स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : रामेश्वरी राम जी दास की पत्नी है। उसके कोई संतान नहीं है। उसका मन हमेशा अपनी संतान के लिए व्याकुल रहता है। पति राम जी दास अपने भाई के बच्चों में अपना प्यार बाँटकर खुश रहते थे। रामेश्वरी तो अपने देवर के बच्चों को चाहकर भी नहीं चाहती। यद्यपि बच्चे उसे अच्छे लगते हैं, लेकिन द्वेष और घृणा के कारण वह बच्चों से दूरी बनाकर रखती है। बच्चों के प्रति राम जी दास का लगाव भी उसे पसंद नहीं।

एक दिन जब मनोहर छत की मुँड़ेर से गिर रहा था, तो एक बार तो उसके मन में आया कि अच्छा हो यदि गिर जाए तो पाप कटे, किंतु जब उसने मनोहर का करुण चेहरा देखा, तो उसका हृदय मनोहर के प्रति करुणा से भर गया। वह मनोहर को बचाने दौड़ पड़ी। वह मनोहर तक पहुँच पाती, इसके पहले मनोहर नीचे गिर गया। इस हादसे का रामेश्वरी पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह स्वयं बेहोश होकर गिर पड़ी। इस घटना ने उसका पूरा हृदय-परिवर्तन कर दिया। ठीक हो जाने के बाद रामेश्वरी मनोहर और चुन्नी को माँ जैसा ही प्यार देने लगी।

भाषा बिंदु

(१) निर्देशानुसार संधि विच्छेद, संधि तथा उनका नामोल्लेख कीजिए :

क्र.	संधि विच्छेद	संधि	संधि का प्रकार
१	सेवार्थ	सेवा + अर्थ	स्वर संधि
२	अभीष्ट	अभि + इष्ट	स्वर संधि
३	नवोढ़ा	नव + ऊढ़ा	स्वर संधि
४	ब्रह्मर्षि	ब्रहम + ऋषि	स्वर संधि
५	दंतोष्ठ	दंत + ओष्ठ	स्वर संधि
६	महौषधि	महा + औषधि	स्वर संधि
७	उपर्युक्त	उपरि + युक्त	स्वर संधि
८	अन्विति	अनु + इति	स्वर संधि
९	वाग्जाल	वाक् + जाल	व्यंजन संधि
१०	सन्मति	सत् + मति	व्यंजन संधि
११	निर्विघ्न	निः + विघ्न	विसर्ग संधि
१२	दुश्चक्र	दुः + चक्र	विसर्ग संधि
१३	निस्संतान	निः + संतान	विसर्ग संधि
१४	दुष्प्रकृति	दुः + प्रकृति	विसर्ग संधि
१५	चतुष्पाद	चतुः + पाद	विसर्ग संधि

(२) परिच्छेद पढ़िए और उसमें आए शब्दों के लिंग एवं वचन बदलकर लिखिए।

मैं गाँव से शहर पढ़ने आता था। गाँव का मेरा एक मित्र भी था। सावन-भादों की बादलों से ढँकी रात में बीहड़ पानी बरसता है। पूरा सन्नाटा शेर की दहाड़ सरीखा गरज उठता है। छमाक से बिजलियाँ कड़कती हैं। माँ बच्चे को अपने छाती से चिपकाती है। हाँड़ी में उबलते दाल-भात के साथ उसकी उम्मीद भी पकती है। उसका श्रम पकता है। अंत में कभी-कभी माँ हाँड़ी में चिपके मुट्ठी भर बचे चावल खाती है। न जाने कहाँ से अपनी आँखों में इतनी तेज चमक पैदा कर लेती है कि भरे पेटवाले की आँखें चौंधियाँ जाती हैं।

उसके त्याग और संतान की तृप्ति के पानी से उसकी साध लहलहाती है। बैलगाड़ी में बैठी संतान को छतरी की छाँव करती है।

बस में बच्चा खिड़की के पास बैठा बाहर दृश्यों को देखता है और वह पूरी यात्रा बच्चे को देखती रहती है। सँभालती रहती है। रेल जब बोगदे के भीतर से गुजरती है, तो अनायास उसका हाथ बच्चे की बाँह पर चला जाता है और पिता का सामान पर ।

(डॉ. श्रीराम परिहार, 'ठिठके पल पाँखरी पर से साभार)

उत्तर : मैं गाँव से शहर पढ़ने आती थी। गाँव की मेरी एक सहेली भी थी। सावन-भादों की बादल से ढँकी रात में बीहड़ पानी बरसता है। पूरा सन्नाटा शेरनी की दहाड़ सरीखा गरज उठता है। छमाक से बिजली कड़कती है। पिता बच्चे को अपनी छाती से चिपकाता है। हाँड़ियों में उबलते दाल-भात के साथ उनकी उम्मीदें भी पकती हैं। उनके श्रम पकते हैं। अंत में कभी-कभी पिता हाँड़ी में चिपका मुट्ठी भर बचा चावल खाता है। न जाने कहाँ से अपनी आँख में इतनी चमक पैदा कर लेता है कि भरे पेट वालों की आँख चौधिया जाती है।

उनके त्याग और संतान की तृप्ति के पानी से उनकी साध लहलहाती है। बैलगाड़ी में बैठे-संतान को छतरी की छाँव करता है।

बस में बच्ची खिड़की के पास बैठी बाहर दृश्यों को देखती हैं और वह पूरी यात्रा बच्चों को देखता रहता है। सँभालता रहता है। रेल जब बोगदे के भीतर से गुजरती है, तो अनायास उसका हाथ बच्ची की बाँह पर चला जाता है और माता का सामान पर।

मौलिक सृजन

जिस व्यक्ति ने आप को सर्वाधिक प्रेरित किया है, उसके व्यक्तित्व की विशेषताएँ लिखिए ।

उत्तर : मैं जब कक्षा आठवीं में था, तब मेरे कक्षा शिक्षक श्री दयाकांत चौबे ने मुझे बहुत प्रभावित किया। वे घंटी बजते ही कक्षा में पहुँच जाते थे। सर्वप्रथम वे विद्यार्थियों की उपस्थिति दर्ज करते थे। इसके तत्काल बाद अध्यापन कार्य शुरू कर देते थे। वे हमें गणित पढ़ाते थे। लोग कहते हैं कि गणित विषय बड़ा नीरस होता है। वे इस विषय को
इस प्रकार प्रस्तुत करते थे जिससे बच्चों में उत्सुकता पैदा हो जाती थी। वे विद्यार्थियों को हमेशा अनुशासित रखते थे।

वे कक्षा में व्यवस्थित ढंग से आते थे। वे बड़े सलीके से कपड़े पहनते थे। विद्यार्थियों को भी हमेशा साफ-सुथरे कपड़े पहनने का निर्देश दिया करते थे। इस प्रकार मेरे कक्षा शिक्षक श्री दयाकांत चौबे ने मुझे सर्वाधिक प्रभावित किया है।

स्वमत
'आज के बच्चे कल का भविष्य', इस बारे में स्वमत लिखिए ।

उत्तर : यह तो सर्वथा सत्य है कि आज के बच्चे ही कल के भविष्य हैं। इसलिए परिवार से लेकर समाज और राष्ट्र को बच्चों के शारीरिक, मानसिक विकास पर ध्यान देना चाहिए। देश के नौनिहालों को भरपूर पौष्टिक भोजन प्राप्त हो, अच्छी शिक्षा प्राप्त हो तथा उन्हें नैतिक शिक्षा के साथ-साथ अच्छे संस्कार भी मिलने चाहिए। इनको बचपन से अपने देश के प्रति प्रेम करने का पाठ पढ़ाना चाहिए। शिक्षा देते समय बच्चों की रुचियों का भी ध्यान रखना चाहिए। आज देश में इतनी अशांति है कि लोग एक- 5-दूसरे की बात सुनने के लिए तैयार नहीं है। बच्चों को शिक्षा देने के साथ-साथ उन्हें आध्यात्मिकता का पाठ पढ़ाया जाना

चाहिए। देश के बच्चों को बचपन से ही स्वच्छता, बड़ों का आदर करना, दूसरों की बातें सुनना आदि बातें सिखानी चाहिए।

यदि हम ऐसा कर सकें, तो देश में भाईचारा बढ़ेगा और देश की एकता और अखंडता मजबूत होगी।

लेखनीय

निम्नलिखित विषय पर एक परिच्छेद लिखिए :
'डिजिटल भारतः एक पहल'

उत्तर : डिजिटल इंडिया के रूप में एक महत्त्वकांक्षी कार्यक्रम का आरम्भ दिल्ली के इंदिरा गाँधी इनडोर स्टेडियम में 1 जुलाई (बुधवार), 2015 को हुआ था। इसकी शुरुआत विभिन्न प्रमुख उद्योगपतियों (टाटा समूह के अध्यक्ष साइरस मिस्त्री, आरआईएल अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक मुकेश अंबानी, विप्रो अध्यक्ष अजीम प्रेमजी आदि) की मौजूदगी में हुई। सम्मेलन में, गाँव से शहर तक भारत की बड़ी संख्या में डिजिटल क्रांति लाने के अपने विचार को इन लोगों ने साझा किया। देश में 600 जिलों तक पहुँच के लिये सूचना तकनीक कंपनी की मौजूदगी में कई सारे कार्यक्रम रखे गये। देश को डिजिटल रूप से सशक्त बनाने के लिये भारत सरकार द्वारा लिया गया एक बड़ा कदम है डिजिटल इंडिया कार्यक्रम। इस योजना से संबंधित विभिन्न स्कीमों को अनावृत किया जा चुका है (एक लाख करोड़ से ज्यादा की कीमत) जैसे डिजिटल लॉकर, ई-स्वास्थ्य, ई-शिक्षा, राष्ट्रीय छात्रवृत्ति पोर्टल, ई-हस्ताक्षर आदि।

पाठ से आगे

'आपसी स्नेह संयुक्त परिवार की नींव है' इसपर अपने विचार स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : पाश्चात्य सभ्यता ने संयुक्त परिवार की नींव हिला दी है। अब संयुक्त परिवारों का स्थान एकल परिवारों ने ले लिया है। संयुक्त परिवार का आधार ही आपसी स्नेह है। ऐसे परिवारों में घर का मुखिया ही सर्वस्व होता है। सभी लोग उसके इशारे पर चलते हैं। घर का मुखिया सबका समान रूप से ध्यान रखता है। किसी को शिकायत का मौका नहीं देता। इसीलिए तुलसी ने लिखा है -

मुखिया मुख सो चाहिए खान-पान में एक ।
पालै-पोषै सकल अंग, तुलसी सहित विवेक ।।
बिना आपसी स्नेह के संयुक्त परिवार नहीं चल सकते।